



“वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली तथा उसके कलाकार”

कीर्ति वर्मा (शोधार्थी)

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

सारांश-विश्वास की यह वैश्विक उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली एक अद्वितीय अंश है, जिसमें पारंपरिक और समकालीन धाराओं का समान मेल होता है। इस कला शैली के कलाकार न केवल रंगों और भावनाओं को साकार करते हैं, बल्कि अपनी अनूठी पहचान भी प्रस्तुत करते हैं। इस अध्ययन में, हम उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में इस विशेष शैली के कलाकारों की विविधता को देखेंगे और उनके रचनात्मक प्रक्रिया का अध्ययन करेंगे। इस अध्ययन के माध्यम से हमें उनके कला के माध्यम से समाज की विभिन्न पहलुओं की अध्ययन का अवसर मिलेगा, जो हमें उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत की विशेषताओं का गहरा ज्ञान प्रदान करेगा। भारतीय चित्रकला का विकास बंगाल स्कूल से हुआ था। उन्होंने कला को एक नई दिशा दी और उसे स्वतंत्रता संघर्ष में एक महत्वपूर्ण उपकरण बनाया। वे पश्चिमी कला के बजाय एशियाई संस्कृति का समर्थन करते थे। टैगोर ने बंगाल शैली का प्रचार किया और अपने अनुयायियों को भारतीय विषय पर बनाने के लिए प्रेरित किया। वर्तमान में वांश शैली के चित्रकार भारत भर में काम कर रहे हैं, इससे भारतीय चित्रकला का विकास और प्रचार होगा। बंगाल स्कूल ने भारतीय चित्रकला को एक नई दिशा दी और स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। अवनींद्रनाथ टैगोर ने एशियाई परंपरा, खासकर बंगाल शैली, का समर्थन किया। वे अपने अनुयायियों को भारतीय शैली विकसित करने के लिए प्रेरित करते थे। वर्तमान में, भारत भर में वांश शैली के चित्रकार चर्चा में हैं, क्योंकि वे भारतीय चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मुख्य शब्द – वांश शैली, उत्तर प्रदेश के चित्रकार , बंगाल स्कूल, बंगाल स्कूल के चित्रकार, रंग भावनाएँ, रचनात्मक प्रक्रिया, सांस्कृतिक विरासत, विविधता

प्रस्तावना- वांश चित्र शैली एक अद्वितीय और सामाजिक विरासत का प्रतीक है, जो रंग, आचार्यता, और साहित्यिकता के रूप में व्यक्त होता है। यह उत्तर प्रदेश के विविध संस्कृति और कला के साथ सम्बद्ध है और उसका महत्वपूर्ण योगदान भारतीय सांस्कृतिक विरासत में है। वांश चित्र शैली की मौजूदगी उत्तर प्रदेश के कलाकारों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो अपनी साहित्यिकता और कलात्मकता के माध्यम से समाज को संवादित करते हैं। वांश चित्र शैली की उत्पत्ति और विकास का इतिहास व्यापक और रोचक है। यह विशेष शैली पहले उत्तर प्रदेश के गांवों और शहरों में उत्पन्न हुई, जहां लोग अपनी रोजमर्रा की जीवनशैली को छोड़कर अपनी कला को समाहित करने में लगे रहते थे। इस शैली का मूल उद्देश्य सामाजिक संदेश को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना है, जिसमें रंग, आकार, और भावनाएं समाहित होती हैं। वांश चित्र शैली के कलाकारों का योगदान सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक मान्यताओं की बढ़ती हुई समझ को दर्शाता है। उनकी कला के माध्यम से, वे समाज के विभिन्न मुद्दों और प्रतिसादों को उजागर करते हैं, जैसे कि सामाजिक असमानता, जातिवाद, और वातावरणीय समस्याएं, वांश चित्र शैली का महत्व और

महत्वपूर्ण स्थान उत्तर प्रदेश के कलाकारों और समाज में है। इस कला के माध्यम से, वे अपनी भावनाओं, धाराओं, और विचारों को व्यक्त करते हैं, जिससे समाज के साथ संवाद बढ़ता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन होता है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के वांश चित्र शैली और उसके कलाकारों की महत्वपूर्ण और अद्वितीय अवस्था को समझने का प्रयास करता है। हम इस कला की विशेषताओं, इतिहास, और प्रभाव को विश्लेषण करेंगे, जिससे हम उसकी समाज में भूमिका को समझ सकें। इस अध्ययन के माध्यम से, हमें उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत और वांश चित्र शैली के साथ सम्बंधित आधुनिक समस्याओं और चुनौतियों को समझने का एक माध्यम मिलेगा। वांश चित्र शैली एक विवादास्पद, अनूठी, और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण विरासत है जो उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता को प्रकट करती है। इस कला शैली के कलाकारों का योगदान सामाजिक और राजनीतिक चर्चाओं को बढ़ावा देता है और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। यह अद्वितीय कला शैली रंग, संगीत, और आदिवासी आदियों के परंपरागत तत्वों को समाहित करती है और समाज में समावेश के माध्यम से समृद्धि और सामर्थ्य का अनुभव कराती है। वांश चित्र शैली की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें साहित्यिक और कलात्मक तत्वों को संघटित किया जाता है, जो समाज में गहरा प्रभाव डालते हैं। यह एक संवादात्मक माध्यम है जो लोगों के बीच विचारों और धाराओं का आदान-प्रदान करता है, जो सामाजिक समस्याओं और उत्थान की चुनौतियों को समझने और हल करने में मदद करता है। वांश चित्र शैली के कलाकारों का उत्पादन विभिन्न चरणों में होता है, जिसमें संग्रहण, अभिव्यक्ति, और दर्शन शामिल होते हैं। यह उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण अंग है और समाज के लिए महत्वपूर्ण साधन है जो लोगों के बीच सामर्थ्य, साहित्यिकता, और समझ को बढ़ावा देता है। इस अध्ययन के माध्यम से, हम उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली के अद्वितीय पहलुओं को समझेंगे और उसके कलाकारों की भूमिका और प्रभाव का विश्लेषण करेंगे। इसके अलावा, हम उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक मान्यताओं के दृष्टिकोण से भी विश्लेषण करेंगे, जिससे हम उसके समाज में प्रभाव को समझ सकें। इस अध्ययन के माध्यम से, हमें उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को समझने में मदद मिलेगी और समाज के साथ संवाद को बढ़ावा देने में सक्षम होंगे।

शोध प्रणाली - मेरे इस शोध कार्य में वर्णनात्मक विधि एवं सर्वेक्षणत्मक विधि का प्रयोग किया गया है इस शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत के अंतर्गत सर्वेक्षणात्मक अध्ययन एवं वाहन के कलाकारों के साक्षात्कार डाटा का संयोजित किया जाता है और द्वितीय डाटा संकलन के अंतर्गत अखबार पत्र पत्रिकाएं एवं किताब इंटरनेट और संग्रहालय आदि के द्वारा शोध पत्र के आंकड़ों से एकत्रित किया गया है। यह शोध भारतीय संस्कृति समाज कला और कलाकृतियों आदि विषयों पर निर्भर करता है जिसमें भारतीय कला और कलाकृतियों के विकास और उसके समाज पर प्रभाव को अध्ययन करने का अवसर मिला है। भारतीय कला संस्कृति और समाज के भिन्न-भिन्न पक्ष पर शोध पत्र लिखने, जिससे इन्हें भारतीय समाज और संस्कृति के विकास और उसके सांस्कृतिक कला और कलाकृतियों के पहलु को गहराई से समझना में सहायता मिलती है।

उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली इतिहास और परिचय:

उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली का इतिहास उसकी समृद्ध और प्रभावशाली विरासत का परिचय देता है। यह कला उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ में महत्वपूर्ण है और उसका इतिहास अत्यंत प्राचीन और विविध है। उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली का इतिहास अपने विशाल भूगोलिक क्षेत्र के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। इसके बाद, ब्रिटिश शासनकाल में भी, उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली को नई दिशा और प्रेरणा मिली, जो समृद्धता और उन्नति की ओर प्रेरित करती रही। उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली का इतिहास उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत की प्रमुख धारा को दर्शाता है, जो उसके समृद्ध और प्रभावशाली कला-संस्कृति के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका अध्ययन हमें उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक विकास और प्रगति के साथ जुड़ा हुआ संशोधन प्रदान करता है। भारतीय चित्रकला शैली का विशेष स्थान औपनिवेशिक काल से पूर्व भारतीय उपमहाद्वीप में था भारतीय संस्कृति हमेशा से बदलाव के साथ-साथ बाहरी तत्वों का अनुशरण करने वाला रहा ब्रिटिश सरकार के आगमन के बाद लुप्त हो गया

था ब्रिटिश शासन का इसके प्रति उदासीन इसका प्रमुख कारण था 18वीं शताब्दी के अंत में भारत में चित्रकला का एक नया रूप प्रस्तुत किया जो कंपनी पेंटिंग या पटना शैली के नाम से प्रचलित रहा है। बंगाल स्कूल ने भारतीय चित्रकला को 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक बार फिर से पुनर्जीवित किया जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक नए रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए जिस तरह भारत की भारतीय संस्कृति के अंश नृत्य संगीत दर्शन आदि समय के साथ-साथ बदलावों को अपने अंदर समाहित कर रहे और इसी प्रकार के राष्ट्रीय नेताओं ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में स्वदेशी विचारधारा को बढ़ावा दिया यह भारतीय आंदोलन आत्मनिर्भर बनने का एक नया आंदोलन बन गया भारतीय संस्कृति में बदलाव और अनुसरण करने का यह गुण हमें भारतीय संस्कृति के अलग-अलग रूप में चित्रकला में समाहित है इस प्रकार चित्रकला अलग-अलग रंग रूप ग्रहण करती है और पश्चिमी साहित्य कला और संस्कृति को खत्म कर घरेलू कला, स्थानीय कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया। ऐसी स्थिति में बंगाल स्कूल का उद्भव हुआ जिसका नेतृत्व अवनींद्रनाथ टैगोर ने किया और ई. वी. हवेल ने इसका सहयोग और समर्थन किया बंगाल स्कूल की संस्कृति परंपरा का अपना विशेष स्थान है ई. वी. हवेल 1886 से 1905 ई. गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स कोलकाता कॉलेज में अपने शिष्यों को मुगल राजपूत लघु चित्रों की प्रतियाँ बनाने को कहा। और उन्हें अत्याधिक प्रोत्साहन किया ई. वी. हवेल और अवनींद्रनाथ जी ने भारतीय कला को पुनर्जीवित किया अवनींद्रनाथ ने पाश्चात्य कला शैली का बहिष्कार करते हुए एशिया चित्रकला की तरफ रुख किया उसके बाद वॉश चित्रकला शैली का उदय हुआ जिसे बंगाल से लिया पुनरुत्थान शैली के नाम से जाना जाता है बंगाल शैली के व्यापक प्रचार के लिए अवनी बाबू ने अपने शिष्यों को भारत के कई प्रमुख विश्वविद्यालय में भेजा जिससे भारतीय वॉश शैली विकास हो सके और वर्तमान समय में वॉश शैली के चित्रकार पूरे भारत में कार्यरत हैं

उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली का महत्व – उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत है जो समृद्धि और सामाजिक समृद्धि का विस्तार किया है। यह कला शैली विभिन्न रंग, आचार्यता, और साहित्यिक तत्वों को समाहित करती है, जो समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। वॉश शैली के कलाकार अपनी रचनाएं सामाजिक संदेशों, जैव और पर्यावरणीय मुद्दों को सामाजिक चरण में प्रस्तुत करते हैं। इसके माध्यम से, वे समाज में जागरूकता बढ़ाते हैं और समृद्धि की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन का समर्थन करते हैं। उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली का महत्व बहुत व्यापक है, और उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली उसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का प्रमुख धारक है। यह कला उसके समृद्ध इतिहास, लोक संस्कृति, और विविधता को प्रतिबिम्बित करती है। वॉश चित्र शैली उत्तर प्रदेश की परंपरागत कला का आधार है और उसका सम्प्रेषण करती है। यह कला उसकी समृद्ध और विशाल विरासत को संरक्षित रखती है और आने वाली पीढ़ियों को इसका महत्व समझाती है। यह कला स्थानीय शिल्पकारों और कलाकारों को रोजगार के अवसर प्रदान करती है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को संबलित करती है। वॉश चित्र शैली अक्सर समुदाय की भावनाओं, सांस्कृतिक अनुभवों, और जीवन की अनुभूतियों को व्यक्त करती है। इसके माध्यम से, लोग अपनी पहचान को संरक्षित करते हैं और अपनी विरासत को आगे बढ़ाते हैं। वॉश चित्र शैली में उपयोग किए जाने वाले स्थानीय सामग्री और तकनीकियों के अद्यतन से पर्यावरणीय संरक्षण को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके लिए योजनाएँ बनाने के लिए कई सांस्कृतिक संस्थान उत्तर प्रदेश में काम कर रहे हैं।

शोध पत्र का उद्देश्य - यह अध्ययन वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली तथा उसके कलाकारों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। इसका महत्व इसके अंतर्निहित सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व को समझने में है, जिससे हम समाज में कला के प्रभाव को समझ सकें और कलाकारों की भूमिका को महत्वपूर्णता दे सकें। इस अध्ययन से हमें उत्तर प्रदेश की कला विरासत को संरक्षित करने और समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाने का अवसर प्राप्त होता है। इस अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित है:

1. उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली के सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण: उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली के उद्देश्य में पहला है इस समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करना। यह अध्ययन इसके महत्वपूर्ण विरासत को जागरूक करने का माध्यम है। सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण समाज के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी विरासत

और भौगोलिक पहचान को बनाए रखने में मदद करता है। इससे सामाजिक सामंजस्य, ऐतिहासिक समृद्धि, और सांस्कृतिक विशेषता की रक्षा होती है। संरक्षण के माध्यम से हम नए पीढ़ियों को अपने धरोहर के महत्व को समझाते हैं और उन्हें इसकी मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करते हैं। सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण हमें हमारी प्राचीनता और आधुनिकता के संयोजन में मदद करता है, जिससे हम अपनी विरासत को समृद्ध और स्थायी बनाए रख सकें।

2. उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली का समाजिक और सांस्कृतिक संप्रेषण: इस अध्ययन का उद्देश्य है उत्तर प्रदेश की वांश चित्र शैली को समाज में सम्मानित करना और सांस्कृतिक संप्रेषण के माध्यम से लोगों के बीच साझा करना। समाजिक और सांस्कृतिक संप्रेषण एक महत्वपूर्ण विषय है जो सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों की विश्वसनीयता और प्रभाव को समझने में मदद करता है। यह समाज में विभिन्न आदर्शों, मूल्यों, और संस्कृतियों के साथ संबंधित होता है और समाज के सदस्यों के बीच साझेदारी और समानता को प्रवर्धित करता है। इसके माध्यम से सांस्कृतिक और सामाजिक बदलावों को समझा जा सकता है और इसके माध्यम से समुदायों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है।
3. वांश चित्र शैली के कलाकारों को रोजगार के अवसर और आर्थिक उन्नति: यह अध्ययन वांश चित्र शैली के कलाकारों को रोजगार के अवसर प्रदान करने और सामाजिक-आर्थिक उन्नति में सहायक होने का उद्देश्य रखता है। सामाजिक और आर्थिक उन्नति समाज के सामाजिक संरचना और आर्थिक प्रगति के साथ जुड़ा हुआ है। यह उन्नति समाज के सदस्यों के जीवन में सामाजिक समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक स्थिति में सुधार के रूप में परिणामित होती है। इसका मतलब है कि सामाजिक और आर्थिक उन्नति से लोगों को अधिक संतुलित, सक्षम, और समृद्ध बनाने में मदद मिलती है। इससे समाज का सामूहिक उत्थान होता है और समाज में समृद्धि और समानता का संदेश फैलता है।
4. वांश चित्र शैली का विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए शिक्षा में प्रासंगिकता: इस अध्ययन का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य है विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और समुदाय के सदस्यों को इस कला और उसके प्रभाव के बारे में शिक्षित करना। विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए शिक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है जो उन्हें नई विचार और कौशल विकसित करने में मदद करता है। शिक्षा उन्हें विज्ञान, साहित्य, कला, और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने का मौका प्रदान करती है। इसके अलावा, शिक्षा उन्हें समाज के सदस्य के रूप में सक्रिय भागीदार बनाती है और उन्हें अपनी सोच को विकसित करने और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करती है। इस तरह, शिक्षा विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए एक निरंतर और सकारात्मक संवेदनशीलता का प्रेरणा स्रोत है।

साहित्य समीक्षा- साहित्य समीक्षा एक महत्वपूर्ण शैली है जिसमें किसी लेखक या कलाकार की रचनाओं की विशेषताओं, महत्व, और साहित्यिक योग्यता का विश्लेषण किया जाता है। यह एक प्रकार की गहन विवेचना है जो विभिन्न पहलुओं को समझने और उन्हें व्याख्या करने के लिए किया जाता है। साहित्य समीक्षा में लेखक की विचारधारा, कल्पना की शक्ति, और रचनात्मक प्रयोगों का विश्लेषण किया जाता है, ताकि पाठक को उस रचना के विशेषताओं का पता चल सके। यह समीक्षा लेखक के सोचने का स्वरूप, संवेदनाओं के विकास, और सामाजिक परिवेश के प्रभाव को समझने का एक श्रेष्ठ माध्यम होता है। साहित्य समीक्षा के दो प्रमुख प्रकार हैं: व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक। व्याख्यात्मक समीक्षा में, लेखक की रचना के प्रमुख पहलुओं का समालोचनात्मक विवेचन किया जाता है, जबकि विश्लेषणात्मक समीक्षा में, रचना के संरचना, भाषा, और साहित्यिक तकनीकों का गहन विश्लेषण किया जाता है। एक साहित्य समीक्षा का आरंभ विशेष उपयुक्तता और विषय के परिचय के साथ होता है। समीक्षा का प्रस्तावन या परिचय

पाठक को लेखक और उनकी रचना के प्रारंभिक संपर्क के साथ परिचित कराता है। इसके बाद, मुख्य भाग में, रचना की महत्वपूर्ण प्रतियों का विवेचन होता है, जो प्रमुख विषयों, पात्रों, और संदेशों के साथ सम्बन्ध रखता है-

- लेखक के अनुसार प्रागैतिहासिक काल से भारतीय चित्रकला का विकासक्रम गुहाओं, भित्तियों से गुजरती हुई पाल, जैन, अपभ्रंश, मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी तथा कंपनी शैली एवं बंगाल शैली, और वर्तमान में आज समकालीन कला तक विद्यमान है। बंगाल शैली को "ठाकुर शैली" भी कहते हैं। ठाकुर शैली या बंगाल शैली की पद्धति की अभिव्यक्ति अजंता की बारीकियों से मिलती है, और जाने कितनी खूबियों को आत्मसात करके ली गई है। जिसका प्रभाव पूर्णता भारतीय है। अवनींद्रनाथ जी के शिष्य एवं उनके विचारों और वहाँ की परंपरागत चित्रकला की विधियाँ एवं विषय वस्तु का अभाव है। इसलिए यह महत्वपूर्ण बिंदु शोध का विषय है। (राय कृष्णदास (2017), भारत की चित्रकला)
- लेखक के अनुसार अवनींद्रनाथ टैगोर और ई० बी० हैवेल के सहयोग से भारतीय कला जगत में नयी विचारधारा का जन्म हुआ। जिसके फलस्वरूप विभिन्न शैलियों का अध्ययन जैसे महीन रेखांकन और रंग संगत आदि को अपनाकर विकास किया गया। जिसे वाँश शैली के नाम से जाना गया और इसे पुनरुत्थान शैली भी कहते हैं। इस शैली का भविष्य में आधुनिक विशेषताओं के साथ समावेश की मांग है, जो शैली की महत्वता को दर्शाती है। (लक्ष्मी नारायण नायक, (2017), कला सैद्धांतिक)
- समाचार पत्र इंटरव्यू के माध्यम से सुखवीर सिंह सिंघल की पौत्री प्रियम चंद्रा ने बताया कि इनके दादा जी स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कलाकृतियों के माध्यम से योगदान दिया। इंटरव्यू के माध्यम से बताया कि उनके दादाजी सुखवीर सिंह सिंघल ने मैरिज प्रोसेशन, गांधी (जिसमें गांधी के जीवन पर प्रकाश डाला गया है) और ब्लूमन लाइफ ऑन रिवर, कलाकृतियों को कांग्रेस के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के मदद के लिए अपना योगदान दिया। प्रियम चंद्र ने बताया कि वह यू.एस में कार्य करती है, और वहाँ की म्यूजियम की यात्रा की उन्होंने पाया कि वहाँ कुछ इंडियन आर्टिस्टों की पेंटिंग है, जो कुछ खास भारतीय कला एवं कल्चर को प्रदर्शित नहीं करती है और 2021 में सुखवीर सिंह सिंघल Pvt. Ltd कंपनी की स्थापना किया। आज अपने दादाजी के कला जीवन को शोधार्थियों, कला मर्मज्ञों एवं विद्यार्थियों, तक पहुँचाने की योजना बनाई और उनकी कलाकृतियों को दिखाने के लिए और लोगों तक पहुँचाने का लक्ष्य बनाया है। सुखवीर सिंह सिंघल की कलाकृतियों की संक्षिप्त जानकारी, उनकी तकनीक, विषय वस्तु एवं विधि इत्यादि की संपूर्ण जानकारी का अभाव है। जो शोध विषय की महत्वपूर्ण बिंदु दिखता है। (द टाइम्स ऑफ इंडिया, लखनऊ, अप्रैल 4 2022)

प्रमुख कलाकारों और उनके कार्यों का वर्णन

- अवनींद्र नाथ टैगोर एवं उनकी कलाकृतियाँ उत्तर प्रदेश की वाँश चित्र शैली के महत्वपूर्ण कलाकारों में से एक हैं। उन्होंने अपनी कला में विविधता और रचनात्मकता की ऊर्जा को समेटा है। उनका काम उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत को समर्थन और प्रसार करने में महत्वपूर्ण योगदान है। उनकी चित्रकला में भारतीय और परंपरागत तत्वों का सुंदर अभिव्यक्ति होती है। उनके कार्यों में सुंदरता, आध्यात्मिकता, और गहराई की भावना होती है। अवनींद्र नाथ टैगोर की कला उत्तर प्रदेश की वाँश चित्र शैली को समृद्धि और सम्मान प्रदान करती है।
- आसित कुमार हलदार एवं उनकी कलाकृतियाँ का काम भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी विशेषता के रूप में वाँश पेंटिंग शैली का प्रयोग किया, जिसमें वे चित्रों को अद्वितीय और जीवंत बनाने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग करते थे। उनके चित्रों में अक्सर गाँव के जीवन का चित्रण, प्राकृतिक दृश्य, और लोक संस्कृति की अद्वितीयता दिखती है। हलदार के चित्रों में उन्होंने भारतीय जीवन-शैली और सांस्कृतिक विविधता को सुंदरता से दर्शाया है। उन्होंने अपनी कला में संगीत, रंग, और भाव की एक अद्वितीय मिश्रण को प्रस्तुत किया है। उनके चित्रों में गहरे भाव, जीवन की सत्यता, और स्थायित्व की अद्वितीयता होती है। हलदार का काम भारतीय चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान था, और उनकी चित्रकला की विशेषता आज भी कलाकारों और कला प्रेमियों को प्रेरित करती है।

- प्रो बद्रीनाथ आर्य एवं उनकी कलाकृतियां** एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी दुनिया में रचनात्मक का विशेष महत्व है एक रचनाकार व्यक्ति के अंदर की विचारों का अभिव्यक्ति होता है वह किसी भी धरातल पर जब खुद के एहसास दुख सुख के अनुभव को व्यक्त करता है तो वह अपनी रचनात्मकता में सफल हो जाता है ऐसे ही एक कलाकार बद्रीनाथ आर्य जिनका जन्म पेशावर पाकिस्तान में 1936 ईस्वी में हुआ था इन्होंने परंपरागत विषयों से हटकर आधुनिक तकनीक में वॉश पद्धति में नई रचनाओं का प्रयोग किया इन्होंने ललित कला में शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय के आर्ट एंड क्राफ्ट महाविद्यालय से किया जहां इन्होंने चित्रकला एवं मूर्तिकला में पोस्ट डिप्लोमा भी किया इन्होंने बंगाल शैली से अलग आधुनिक चित्र कृतियों का निर्माण किया और उन्होंने जल रंग में इस प्रकार कार्य किया जैसे प्रतीत होता है की जल रंगों से जादूगरी किया गया हो उनके चित्रों में ज्यादातर से हरा सफेद और आसमानी रंगों का प्रयोग हुआ है जो ऊपर की तरफ जाते ही धुंधला जैसा प्रभाव उत्पन्न करते हैं आर्य साहब की वॉश तकनीकी में चित्रित सवारी चित्र वर्तमान में इलाहाबाद संग्रहालय के आधुनिक कला गैलरी में स्थित है जिसमें एक स्त्री अपने बालों को सवारते हुए दर्शाया गया है यह स्त्री देखने में आदिवासी लगती है जिसके कानों में कुंडल बाजूबंद कंठ हार वेशभूषा धारण किए हुए हैं जो आदिवासी स्त्री की संस्कृति को दर्शाता है बद्रीनाथ आर्य की यह कलाकृति सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों में से एक है□
- नित्यानंद महापात्रा एवं उनकी कलाकृतियां** नित्यानंद महापात्रा जी अपने वॉश में बनाए गए शिव श्रृंखला चित्र के लिए जाने जाते हैं इनका जन्म जगन्नाथ पुरी उड़ीसा में 1931 ईस्वी में हुआ था इन्होंने कला एवं शिल्प महाविद्यालय लखनऊ से शिक्षा ग्रहण किया यह अपनी छवि चित्रण के लिए प्रसिद्ध है उनके चित्रों का संग्रह राज्य ललित कला अकादमी लखनऊ में मिलते हैं उनके द्वारा बनाया गया saira चित्र में रंगों को चटक न रहकर धुंधलापन दिखता है यह धुंधलापन वॉश चित्रों की तरह दिखाई पड़ते हैं इन्होंने अन्य विभिन्न माध्यमों में भी कार्य किया है जैसे टेंपरा पेस्टल और जल रंग इत्यादि इनके उमर ख्याम चित्र श्रृंखला अतुलनीय है□
- क्षितिंद्र नाथ मजूमदार एवं उनकी कलाकृतियां** एक शिक्षक के साथ चित्रकार भी रहे हैं भारतीय पुनर्जागरण में इनका विशेष योगदान रहा है कला के क्षेत्र में क्षितिंद्र नाथ मजूमदार का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। कला सृजन एवं तकनीकी प्रक्रिया में मजूमदार जी के चित्रों में बहुत विविधता है। संत चित्रकार पुरानी पीढ़ी के चित्रकार आधुनिक चित्रकला शैली के जगत में मजूमदार जी प्रख्यात हैं इन्होंने अपनी कला में धार्मिकता वाले विचारों को प्रमुखता दी है। वैष्णव संत कलाकार क्षितिंद्र नाथ मजूमदार ने चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के दर्शन पर चित्रों का अंकन किया है। उनके चित्रों में लयात्मकता और रंगों की पारदर्शिता है। क्षितिंद्र नाथ मजूमदार का " चैतन्य का ग्रह त्याग सृजनात्मक दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है। रंग विधान भावमयी, मुद्रा मनमोहन और वैराग्य के वातावरण का भाव दिखाया गया है। इन्होंने अपने चित्रों में अलंकारीकता को भी महत्व दिया। आचार्य मजूमदार जी की कला शैली का आधार पारंपरिक धार्मिक परंपराओं का अनुशरण देखने को मिलता है।
- डी० पी० धूलिया एवं उनकी कलाकृतियां** जिन्हें द्वारिका प्रसाद धूलिया के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश के आधुनिक कला संसार में उनकी कलाकृति इंडा बहुत विख्यात है। द्वारिका प्रसाद जी प्रमुख चित्रकार होने के साथ-साथ कुशल कला शिक्षक भी रहे हैं इनका जन्म 1923 ई में हुआ था इन्होंने चित्रकला में शिक्षा कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ से प्राप्त किया। इसके बाद इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय तत्पश्चात ललित कला एवं संगीत विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए थे। यह एक चित्रकार होने के साथ कुशल लेखक और कवि भी थे। इनके द्वारा लिखित पुस्तक "चित्र दर्शन " भारतीय कला के विकास में अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई यह अपने दृश्य चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं इनके चित्रों का संग्रह भिन्न-भिन्न स्थानों पर है जिसमें कुछ चित्र इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद, राज्य संग्रहालय लखनऊ और गीता गार्डन गोरखपुर में है।
- श्याम बिहारी अग्रवाल एवं उनकी कलाकृतियां** कला एवं साहित्य के प्रति बचपन से ही रुचि होने के कारण इन्होंने कला में अपना भविष्य बनाने लग गए और अपनी कला साधना में लीन रहने लगे। डॉ अग्रवाल की वॉश शैली के चित्रित कलाकृतियां, परंपरागत वॉश से अलग दिखाई देती हैं। इन्होंने अपनी चित्रों में न्यूट्रल कलर को मिलाकर कलर में वॉश देते हैं। कलाकृतियों में किस प्रकार की रंगों का चयन करना है उसके प्रति वह बहुत सजग रहते हैं। इनका प्रसिद्ध चित्र " लोहार " मे कार्य कर करते हुए एक व्यक्ति की भाव मुद्रा देखते बनती है जो भट्टी की आग से रोशनी होती है वह चित्र कृति को जीवंत कर देती है और छाया प्रकाश का अद्भुत प्रभाव दिखाई देता है। जो श्रम व्यवस्था को दिखाने में सक्षम है। इनके द्वारा बनाया गया बहुत बहुत सारा चित्र देश विदेश

संग्रहालय में देखी जा सकते हैं। वह वाँश शैली में बना प्रारंभिक चित्र" कामायनी (श्रद्धा) विख्यात चित्रों में से एक है। डॉक्टर अग्रवाल के चित्रों में रंगों के साथ नयापन उनकी कलाकृतियों की विशेषता है।

उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता और उसका प्रभाव

उत्तर प्रदेश भारतीय सांस्कृतिक विविधता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है और यहाँ कई विभिन्न संस्कृतियों का संगम होता है। यहाँ कई ऐतिहासिक और प्राचीन नगर हैं जैसे की वाराणसी, अयोध्या, मथुरा, लखनऊ, वृंदावन, फैजाबाद, और बनारस जो भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण केंद्र हैं। उत्तर प्रदेश का पर्यटन, खासकर इन ऐतिहासिक स्थलों के चलते, विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उत्तर प्रदेश में विभिन्न समुदायों, जातियों, धर्मों, और विशेष उत्सवों के अनेक रूप मौजूद हैं, जिनसे इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विविधता का प्रमुख आधार मिलता है। उत्तर प्रदेश की विविधता में उत्तरी भारतीय और मुगल शैली के संगीत, नृत्य, कला, और साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ की लोक संस्कृति में विविधता के रूप में भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, बुंदेलखंडी, गढ़वाली, कुमाऊनी, बखारा, ठारवाड़ी, गजल, कविता, कहानी, और लोक नृत्य जैसे विभिन्न रंगमंच हैं। इन सभी पहलुओं से उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता में एक सामूहिक और समृद्ध विश्वास होता है जो इसे भारतीय सांस्कृतिक समृद्धि के महत्वपूर्ण केंद्र में रखता है। उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक विविधता ने भारतीय साहित्य, कला, संगीत, और धर्म को विश्व स्तर पर प्रस्तुत किया है और उसका प्रभाव भारतीय साहित्य और कला के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण रहा है।

समकालीन चुनौतियाँ और उत्तर प्रदेश की वाँश चित्र शैली के कलाकार

वाँश चित्र शैली एक अद्वितीय चित्रकला की शैली है जो रंगों को पानी या अन्य तरल पदार्थों के साथ मिलाकर उन्हें चित्र की सतह पर फैलाती है। इसके जरिए, चित्रकारों को विशेष रूप से प्राकृतिक और अद्वितीय रंगों का उपयोग करने की सुविधा मिलती है, जिससे उन्हें अपनी रचनाओं में आकर्षक और अलगावदार प्रभाव प्राप्त होता है। उत्तर प्रदेश के वाँश शैली के कलाकार इस शैली का प्रयोग करके अपने चित्रों में समकालीन चुनौतियों को प्रस्तुत करते हैं और साथ ही उन्हें अपने परिवारिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक परिवेश का अद्भुत अनुभव कराते हैं। वाँश चित्र शैली के उत्तर प्रदेश के कलाकारों का काम अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे अपनी कला के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं और समाज में जागरूकता फैलाते हैं। इन कलाकारों का काम समकालीन समाज की चुनौतियों, जैसे कि पर्यावरण संरक्षण, नारी सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय, और आधुनिकता के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित होता है। वाँश शैली के कलाकारों का काम उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता को प्रस्तुत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके चित्रों में उत्तर प्रदेश की प्राचीनता, रूढ़िवादिता, और परंपरागत मूल्यों का समाहार किया जाता है, जिससे उनकी कला का विशेष महत्व होता है। उत्तर प्रदेश की वाँश शैली के कलाकारों का काम समाज में संचार का माध्यम भी बनता है। उनके चित्रों में व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों को प्रस्तुत किया जाता है, जो देखने वालों में संवेदनशीलता और गहरी विचारशीलता का अनुभव कराता है। उनके चित्र में समाज की विभिन्न प्रतिष्ठाओं, संस्कृतियों, और रूढ़िवादिता का उल्लेख किया जाता है, जो उन्हें सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण बनाता है। वाँश शैली के कलाकारों की कला अपनी अद्वितीयता और विशेषता के लिए प्रसिद्ध है। इन कलाकारों का काम उत्तर प्रदेश की विविधता और समृद्धता को उजागर करता है और समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक बदलाव लाने में मदद करता है। उनके चित्रों में समकालीन चुनौतियों, सामाजिक न्याय, और पर्यावरण संरक्षण के मुद्दे को उजागर किया जाता है, जो उन्हें समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने और सम्मानित करने में मदद करता है। वाँश शैली के कलाकारों का काम उत्तर प्रदेश की समृद्ध और विशेष संस्कृति को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके चित्रों में उत्तर प्रदेश की प्राचीनता, रूढ़िवादिता, और विविधता का प्रतिष्ठान होता है, जिससे उन्हें समाज में महत्वपूर्ण बनाता है। उनके चित्र में समाज की विभिन्न प्रतिष्ठाओं, संस्कृतियों, और रूढ़िवादिता का उल्लेख किया जाता है, जो उन्हें सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण बनाता है। वाँश शैली के कलाकारों की कला उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विविधता को प्रस्तुत करने में

भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनके चित्रों में उत्तर प्रदेश की प्राचीनता, रूढ़िवादिता, और परंपरागत मूल्यों का समाहार किया जाता है, जिससे उनकी कला का विशेष महत्व होता है।

नए तकनीकी अद्यतन का प्रभाव

नए वांश तकनीकी अद्यतन का प्रभाव कला और चित्रकला के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह तकनीकी अद्यतन चित्रकारों को नई और उन्नत तकनीकों का उपयोग करने का अवसर प्रदान करता है, जिससे वे अपनी रचनात्मकता को बढ़ाते हैं और अपने काम को अधिक विविध बनाते हैं। नए वांश तकनीकी अद्यतन ने चित्रकला को एक नई और उन्नत स्तर पर ले जाया है, जिससे चित्रकारों को अपनी रचनात्मकता को बढ़ाने का अधिक अवसर मिलता है। इससे चित्रकला के क्षेत्र में और भी नए और रोमांचक काम देखने को मिलते हैं और यह चित्रकला को एक महत्वपूर्ण और आकर्षक क्षेत्र बनाता है।

- नए वांश तकनीकी अद्यतन के परिणामस्वरूप, चित्रकार अब पानी के साथ साथ अन्य तरल पदार्थों का भी उपयोग करते हैं जैसे कि तेल, दारु, या अन्य तरलिकृत रंग। इससे उन्हें और अधिक रंगीन और आकर्षक चित्र बनाने की स्वतंत्रता मिलती है।
- नई तकनीकी अद्यतन के साथ, चित्रकार नए और उन्नत चित्रकला साधनों का उपयोग कर सकते हैं, जैसे कि विभिन्न प्रकार के ब्रशेस, स्प्रे पेन्सिल, और अन्य चित्रकला साधन। ये साधन उन्हें अपने चित्रों को और अधिक विविध और रुचिकर बनाने में मदद करते हैं।
- नए तकनीकी अद्यतन ने चित्रकला को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी ले जाया है। चित्रकार अब कंप्यूटर प्रोग्रामों और डिजिटल टूल्स का उपयोग करके अपनी रचनात्मकता को व्यक्त कर सकते हैं। इससे चित्रकला के क्षेत्र में और भी नए और विशेष रूप में चित्रकारों का काम देखने को मिलता है।
- नई तकनीकी अद्यतन चित्रकारों को समकालीन विषयों को अपने चित्रों में प्रतिबिंबित करने का अवसर भी देता है। वे समाज में हो रही विभिन्न चुनौतियों, समस्याओं, और प्रश्नों को अपने कला के माध्यम से उजागर कर सकते हैं।
- नए तकनीकी अद्यतन के साथ, चित्रकारों को अधिक स्वतंत्रता और नवाचार की सुविधा मिलती है। वे अपनी रचनात्मकता को और भी अधिक बढ़ा सकते हैं और अपने काम में नए और अनूठे तरीके से प्रदर्शन कर सकते हैं।

कलाकारों के जीवन और समाज में उनकी भूमिका

वांश कला शैली के कलाकारों की भूमिका उनके जीवन और समाज में महत्वपूर्ण है। इन कलाकारों का काम सिर्फ चित्रकला की दुनिया में ही सीमित नहीं रहता, बल्कि उनकी रचनाओं के माध्यम से वे समाज में गहरी प्रभाव डालते हैं। निम्नलिखित हैं कुछ महत्वपूर्ण तत्व जो इन कलाकारों की भूमिका को समझने में मदद करते हैं:

- वांश कला शैली के कलाकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर जागरूक करते हैं। उनके चित्रों में वे समाज की समस्याओं, जैसे कि गरीबी, न्याय, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण आदि पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- सामाजिक वांश कला शैली के कलाकार समाज में परिवर्तन का सहारा बनते हैं। उनकी रचनाओं में वे नई और सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और लोगों को सोचने पर आमंत्रित करते हैं।
- इन कलाकारों के द्वारा बनाए गए चित्र समाज में संवेदनशीलता उत्पन्न करते हैं। उनकी कला में सामाजिक संदेशों, भावनाओं, और विचारों को प्रकट किया जाता है, जो लोगों की भावनाओं को स्पर्श करता है।
- वांश कला शैली के कलाकार अपने काम के माध्यम से अपने आत्मविश्वास को बढ़ाते हैं और अन्य युवाओं को भी रचनात्मकता की दिशा में प्रेरित करते हैं। इसके अलावा, उन्हें समाज में समर्थन प्राप्त होता है जो उन्हें अधिक उत्साहित करता है।

- वॉश कला शैली के कलाकार विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करने का माध्यम बनते हैं। उनकी रचनाओं में वे लोगों को सोचने पर मजबूर करते हैं और उन्हें अपने विचारों को साझा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रकार, वॉश कला शैली के कलाकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है जो समाज में चित्रकला के माध्यम से संवेदनशीलता और जागरूकता को बढ़ाते हैं। उनके द्वारा बनाए गए चित्र समाज को नई दिशा देते हैं और सोचने पर विवश करते हैं।

कला के क्षेत्र में रोजगार के अवसर और आर्थिक महत्व

वॉश कला शैली के क्षेत्र में रोजगार के अवसर और आर्थिक महत्व महत्वपूर्ण हैं। इस कला शैली के अध्ययन, प्रशिक्षण, और प्रदर्शन के लिए विभिन्न अवसर होते हैं जो लोगों को रोजगार की संभावनाएं प्रदान करते हैं और समृद्धि का मार्ग दिखाते हैं। वॉश कला शैली के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बहुत हैं और यह कला से जुड़े व्यक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण और आकर्षक क्षेत्र है जो उन्हें स्वावलंबी बनाता है। वॉश कला शैली के क्षेत्र में रोजगार के अवसर और इसका आर्थिक महत्व निम्नलिखित हैं:

- वॉश कला शैली के कलाकार अपने विशेष कौशल और रचनात्मकता के माध्यम से आत्मनिर्भर रोजगार का संचार करते हैं। वे अपने चित्रों को विभिन्न प्लेटफॉर्मों पर बेचकर आय कमा सकते हैं या फिर संग्रहों, गैलरियों, या कला निर्माताओं के साथ समझौते कर सकते हैं।
- वॉश कला शैली के विशेषज्ञ शिक्षक और प्रशिक्षक कला संस्थानों, कला स्कूलों, और निजी शैक्षणिक संस्थानों में नियुक्त किए जा सकते हैं। वे युवा कलाकारों को वॉश कला शैली के बारे में शिक्षा देते हैं और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करते हैं।
- वॉश कला शैली के क्षेत्र में रोजगार के अवसर संग्रहालयों और कला गैलरियों में भी होते हैं। यहाँ पर कला प्रदर्शनी, निर्देशन, और प्रबंधन के कार्यों के लिए लोग आवश्यक होते हैं।
- वॉश कला शैली के क्षेत्र में अध्ययन और अनुसंधान के अवसर भी होते हैं। यह विभिन्न संस्थानों और अनुसंधान संगठनों में विभिन्न कला विषयों पर शोध करने के लिए काम कर सकते हैं।
- वॉश कला शैली के चित्रों का व्यापारिक उपयोग भी होता है। कला निर्माता, डिजाइनर, और विभिन्न कला संबंधित उत्पादों के निर्माता इन चित्रों का उपयोग अपने उत्पादों की प्रचार और विपणन में करते हैं।

उत्तर प्रदेश में वॉश चित्र शैली के संरक्षण के लिए कुछ प्रस्तावित उपाय निम्नलिखित हैं:

- राज्य सरकार को सांस्कृतिक संरक्षण को महत्व देना चाहिए, जिसमें वॉश चित्र शैली भी शामिल है। सांस्कृतिक प्रोत्साहन के लिए सभी संबंधित संगठनों और अधिकारियों को संरक्षण की विशेष योजनाओं की विकास में सहयोग करना चाहिए।
- राज्य सरकार को कला और सांस्कृतिक संस्थानों का समर्थन करना चाहिए, जिनमें वॉश चित्र शैली के अध्ययन, प्रशिक्षण, और प्रसार के लिए अधिक संसाधन प्रदान किया जा सकता है।
- वॉश चित्र शैली के क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें स्थानीय कलाकारों को वॉश कला शैली के तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
- स्थानीय सामुदायिक संगठनों और स्थानीय लोगों को वॉश चित्र शैली के संरक्षण में सहभागी बनाया जा सकता है। इन संगठनों को वॉश कला के प्रति जागरूकता बढ़ाने और इसे संरक्षित रखने के लिए काम करने में सहायक बनाया जा सकता है।
- कला प्रदर्शनी और संगोष्ठियों का आयोजन किया जा सकता है, जिसमें स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय कलाकारों को आमंत्रित किया जा सकता है और वे अपने काम को प्रदर्शित कर सकते हैं। इससे वॉश चित्र शैली को समाज में विस्तार से प्रसारित किया जा सकता है और इसका संरक्षण हो सकता है।

- सरकार को आर्थिक समर्थन प्रदान करना चाहिए जिससे वॉश कला कलाकारों को संरक्षित करने में मदद मिले, उन्हें संग्रहण, प्रदर्शन, और बिक्री के लिए आवश्यक सामग्री का उपयोग करने की सुविधा मिले। इन प्रस्तावित उपायों के माध्यम से, उत्तर प्रदेश में वॉश चित्र शैली के संरक्षण को सुनिश्चित किया जा सकता है और इसके विकास का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

परंपरागत और सामुदायिक कला की महत्वपूर्णता वॉश शैली

कला का परंपरागत और सामुदायिक कला के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका है। यह कला शैली परंपरागत संस्कृति और सामाजिक संरचना के अहम हिस्से को अभिव्यक्त करती है, साथ ही सामुदायिक समृद्धि और सांस्कृतिक अनुभव को बढ़ावा देती है। निम्नलिखित हैं कुछ महत्वपूर्ण कारण जिनसे व्यक्ति और समाज के लिए वॉश चित्र शैली का परंपरागत और सामुदायिक कला के संरक्षण में महत्व बनता है। वॉश चित्र शैली परंपरागत और सामुदायिक कला के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो समाज में सामूहिक समृद्धि और सांस्कृतिक आत्मविश्वास को बढ़ावा देती है।

- वॉश चित्र शैली समाज की परंपरागत संस्कृति, अदाकारी, और रिवाजों को संरक्षित करती है। इसके माध्यम से पीढ़ियों को पारंपरिक रूप से प्रतिभागी बनाया जा सकता है और संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है।
- वॉश चित्र शैली स्थानीय समुदायों के लिए आर्थिक समृद्धि का महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है। कलाकारों को विभिन्न कला उत्पादों का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, जो उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाता है।
- वॉश चित्र शैली के माध्यम से सामाजिक समरसता और एकता को बढ़ावा दिया जा सकता है। सामुदायिक कला कार्यक्रम और उत्सव व्यक्ति और समुदाय के बीच एक मंढक का माहौल सृजित कर सकते हैं।
- वॉश चित्र शैली संस्कृति, इतिहास, और जीवन के मूल्यों को सिखाने का महत्वपूर्ण माध्यम हो सकती है। इसके माध्यम से स्थानीय लोग अपनी परंपराओं को और अपने विरासत को समझने में सहायक हो सकते हैं।
- वॉश चित्र शैली के माध्यम से लोगों को सामाजिक सहभागिता का अवसर प्राप्त होता है। उन्हें अपने समुदाय के साथ जुड़ने और समृद्धि के लिए मिलकर काम करने का अवसर मिलता है।

निष्कर्ष - इस अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय सांस्कृतिक विरासत है जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का साधन है। इस कला के माध्यम से, कलाकार समाज की मुख्य मुद्दों और चुनौतियों को साझा करते हैं और उनकी सृजनात्मक प्रक्रिया से नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वॉश चित्र शैली का इतिहास उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक और कलात्मक विकास को प्रतिष्ठित करता है और इसे समृद्ध, समरसता और समृद्धि की ओर एक महत्वपूर्ण कदम बढ़ाने में मदद कर सकता है। उत्तर प्रदेश की वॉश चित्र शैली एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धारा है जो समृद्धि, समरसता, और समृद्धि की दिशा में सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करती है। इस कला शैली के कलाकारों ने न केवल रंगों और आकृतियों के माध्यम से समाज की चुनौतियों को बयान किया है, बल्कि उन्होंने अपनी कला के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया है। इसके माध्यम से, समाज में विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर मिलता है और यह सांस्कृतिक विरासत की विशेषताओं को समर्थन करता है। इस प्रकार, वॉश चित्र शैली उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक और कलात्मक समृद्धि में एक महत्वपूर्ण योगदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- कृष्णदास, राय (2017), भारत के चित्रकला, भारतीय भंडार लीडर प्रेस इलाहाबाद।
- राठौर, मदन सिंह, भारतीय कला भाग 1, राजस्थान ग्रंथ अकादमी पब्लिकेशन, राजस्थान
- राठौर, मदन सिंह, भारतीय कला भाग-2, राजस्थान ग्रंथ अकादमी पब्लिकेशन, राजस्थान
- नायक, लक्ष्मीनारायण (2017), कला सैद्धांतिक, बी. के ऑफसेट S93 नवीन सहाग्र, दिल्ली
- अग्रवाल, डॉ गिरीराज किशोर, आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन आनंद कांप्लेक्स किदवई पार्क राजा मंडी, आगरा -2
- चतुर्वेदी, डॉ ममता समकालीन भारतीय कला, राजस्थान ग्रंथ अकादमी, प्लॉट नंबर 1 झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर।
- गोरिल्ला, वाचस्पति (1965), भारतीय चित्रकला, मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद।
- डॉ हसन सहला (2017), भारतीय और पाश्चात्य कला प्रिया पब्लिकेशन, इलाहाबाद
- एनसीआरटी, (2020) एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन आर्ट पार्ट 1, एनसीआरटी कैंपस श्री अरबिंदो मार्ग, न्यू दिल्ली
- एनसीआरटी, (2020) एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन आर्ट पार्ट-2, एनसीआरटी कैंपस श्री अरबिंदो मार्ग, न्यू दिल्ली
- पुनर्जागरण काल या बंगाल स्कूल के चित्रों की विशेषताएं (316), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास
- एस०के० भट्टाचार्य, (1966) द स्टोरी ऑफ इंडियन आर्ट, आत्माराम एंड संस, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली।
- नितिन सिंघानिया, (2017) भारतीय कला एवं संस्कृति, प्राइवेट लिमिटेड, चेन्नई